नवरात्रि : 17 अक्टूबर 2020 से 24 अक्टूबर तक

नवरात्रि में पदार्थ पूजन से कामना पूर्ति

नवरात्रि के आगमन के पूर्व ही भक्तों एवं साधकों में एक सक्रियता आ जाती है, एक भक्ति लहर का संचार होने लगता है। सभी समय से पहले ही नवरात्रि में की जाने वाली पूजा-उपासना की तैयारियों में जुट जाते हैं। सभी चाहते हैं कि इस नवरात्रि में वे किसी भी तरह माँ भगवती को प्रसन्न कर लें और अपने सभी मनोरथों को पूर्ण करने में सक्षम हों। कोई संतान संबंधित सुख चाहता है तो कोई आर्थिक रूप से सम्पन्न होना चाहता है, कोई आध्यात्मिक सुख भोगना चाहता है तो कोई सांसारिक जीवन में ऊँचा उठना चाहता है। साधकों एवं पाठकों की अभिलाषाओं को पूर्ण करने हेतु नीचे कुछ ऐसे विशेष पदार्थ पूजन की विधि बतलाई जा रही है जिन्हें कर साधक माँ भगवती से मनचाहा वरदान पा सकेंगे। आईये जाने यह पदार्थ पूजन क्या है...!!

नवरात्रि के आगमन के पूर्व ही साधकों की सक्रियता आरम्भ हो जाती है। आश्विन कृष्ण (पितर पक्ष) के व्यतीत होते ही आश्विन शुक्ल की प्रतिपदा से नवरात्रारंभ काल होता है जिसमें माँ भगवती की सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत पूजा पाठ जाप हवन सिद्धि साधना होती है। साधकों को पूजा विधि दी जा रही है।

प्रतिपदा के कर्त्तव्य-नवरात्रि के प्रथम दिवस प्रतिपदा को गौ धृत से षोडशौपचार पूजा कर गौ घृत अपर्ण करें। इससे आरोग्य लाभ होता है।

द्वितीया तिथि-शक्कर का भोग लगाकर उसे दान करें। शक्कर का दान दीर्घायु कारक होता है।

तृतीया तिथि-को दूध की प्रधानता होती है। पूजन में दूध का उपयोग कर उसे ब्राह्मण को दान करें। दूध का दान दुः खों से मुक्ति का परम साधन है।

चतुर्थी-चतुर्थी को मालपुआ का नैवेद्य अर्पण करें सुयोग्य बाह्मण को दान करें इससे बुद्धि का विकास होता है। निर्णय शक्ति में असाधारण विकास होता हैं।

पंचमी- पंचमी तिथि को केले का नैवेद्य चढ़ावें प्रसाद ब्राह्मण को दान करें इससे बुद्धि का विकास होता है। निर्णय शक्ति में असाधारण विकास होता है।

षष्ठी तिथि-षष्ठी तिथि को मधु का विशेष महत्व है। मधु से पूजन कर ब्राह्मण को दान करने से स्वरूप में आकर्षण का उदय होता है सुन्दरता में वृद्धि होती है।

सप्तमी तिथि-सप्तमी तिथि को गुड़ का नैवेद्य अर्पण ब्राह्मण को करना शोक मुक्ति का कारक है गुड़ दान से आकस्मिक विपत्ति से रक्षा होती है।

अष्टमी तिथि-को भगवती को नारियल का भोग लगाना तथा नारियल दान करना संताप रक्षक है। किसी भी प्रकार की पीड़ा का शमन होता है।

नवमी तिथि-को धान के लावा से पूजा करना चाहिए। धान के दान करने से लोक-परलोक का सुख प्राप्त होता है। दशम तिथि को काले तिल के नैवेद्य का अर्पण कर दान करने से परलोक का भय नहीं होता है।

तृतीया तिथि पर विशेष पूजा-

हर मास में तृतीया तिथि आती है तृतीया शुक्ल पक्ष को चैत्र में महुआ के वृक्ष में भगवती की भावना कर पूजा करें। वैशाख में गुड़, ज्येष्ठ में मधु, आषाढ़ में महुए का रस, श्रावण में दही, भादों में चीनी, आश्विन में खीर, कार्तिक में दूध, मार्ग शीर्ष में फैनी, पौष में दधि कूर्चिका, माघ में गाय का घी, फाल्गुन में नारियल का नैवेद्य करें इनमें क्रमशः मंगला वैष्णवी माया काल रात्रि दुरत्यया, महामाया मातंगी काली कमल वासिनी शिवा

सहस्त्र-चरण और सर्व मंगल रूपिणी के स्वरूप की पूजा करें। यथा-

मंगला वैष्णवी माया काल रात्रि दुर्रत्यया महामाया मतगड़ी च काली कमलवासिनी

शिव सहस्त्र चरण सर्व मंगल रूपणी।
एमिर्नाम पदै देवी मधु के परिपजयेत्।

महुआ के वृक्ष पर देवी विराजती हैं।

पीपल वट के नीम आम कैथ, बेर कटहल मदार करील और महुआ ये देवी के वृक्ष हैं।

नव तिथियों के अतिरिक्त तिथियों में-

एकादशी को दही का भोग लगाकर दही दान करें। देवी इससे संतुष्ट होती है। द्वादसी को चिउड़ा का भोग लगाकर दान करने से देवी की कृपा मिलती है। त्रयोदशी को देवी को चने का नैवेद्य चढ़ाकर दान करने से संतान सुख वृद्धि होती है। चतुदर्शी को सत्तू का भोग लगाकर दान करने में भगवान शिव प्रसन्न होते हैं। पूर्णिमा को खीर का भोग लगाने से पितरो का उद्धार तथा कृपा प्राप्त होती है। जिन तिथियों को जिस वस्तु की पूजा विधान है उसी से हवन करें। इस प्रकार का हवन समस्त अरिष्टों का विनाश करता है।

वार अनुसार भोग-

रविवार को खीर, सोमवार को दूध, मंगलवार को केला, बुधवार को मक्खन, गुरूवार को खांड, शुक्रवार को शक्कर, शनिवार को गाय का घी नैवेद्य करें। नक्षत्र नैवेद्य अश्वनी से रेवती तक 26 नक्षत्र होते हैं। जिनमें क्रमशः नैवेद्य इस प्रकार लगावें- घी, तिल, चीनी, दूध, मलाई, लस्सी, लड्डू, तारफेनी, धृतमण्ड, कसार, पापड़, घेवर, पकौड़ी, कोक रस, घृत मिश्रित चने का चूर्ण, मधु चूरमा, गुड़ चिउड़ा, दाख, खजूर, चारक, पुष्प, मक्खन, मूंग के लड्डू और अनार का नैवेद्य करें।

तुलसी पूजा का महत्व

घर-घर में विराजमान तुलसी सदैव पूज्यनीय तथा वन्दनीय है। इससे समस्त पापों का नाश होता है तथा परम पुण्य मिलता है। तुलसी भी लक्ष्मी की तरह सौभाग्यवती है। घी का दीपक, धूप, सिन्दूर, चंदन, नैवेद्य और पुष्प से पूजा करने से तुलसी प्रसन्न होती है। वृन्दा वृन्दावनि विश्व पूजिता विश्व पावनी पुष्पसारा नन्दिनी तुलसी और कृष्ण जीवनी ये आठ नाम हैं तुलसी के। यह तुलसी का नामाष्टक हैं जिसके पाठ से अश्वमेघ यज्ञ का लाभ मिलता है।

तुलसी की स्तुति-

नारायण उवाच

अन्त हितायां तस्यां च हरिर्वृन्दावने तदा।
तस्या श्र के स्तुति गत्वा तुलसी विरहातुरः।।
श्री भगवानु वाच
वन्दा रूपाश्च वृश्नाव्व य दैकत्र भवन्ति च।
विदुर्व धास्तेन वृन्दां मतिप्रिया तां मजाम्यहय।।
पुरा वभूव या देवी त्वादौ वृन्दावने वने।
तेन वृन्दावनी स्याता सौभाग्यां तांभजाम्यहम।।
असष्येषु च विश्वेषु पूजिता या निरन्तरम।
तेन विश्व पूजितास्या पूजितां च भजाम्यहम।।
असस्यानि च विश्वानि पवित्राणि त्वाया सदा।
तां विश्व पावनीं देवी विरहेण स्मराम्यहम।।
देवा न तुष्टा पुष्पाणां समूहेन ययाविना।
तां पुष्पं सरां शुद्धां च द्रुष्टुमिच्छामि शोकतः।।
विश्वे यत्प्राप्ति मात्रेण भक्तानन्दे भवेद ध्रुवम।
नन्दनी तेन विख्याता सा प्रती भवतादिह।।
यस्या देव्यास्तुला नास्ति विश्वेषु विर्गनखिलेषुच।
तुलसी तेन विख्याता तां यामि शरणं प्रियाम।
कृष्ण जीवन रूपा सा शार्श्वत्प्रयतमा सती
तेन कृष्ण जीवनी सा सा मे रज्ञतु जीवनम्

तुलसी नामाष्टक

वृन्दा वृन्दावनी विश्वपूजिता विश्वपावनी।
पुष्पसारा नन्दनीच तुलसी कृष्ण जीवनी।।
एतभामांष्टक चेव स्त्रोतं नामर्थं संयुतम।
यः पठेत तां च सम्पूज्य सौऽश्रमेघ फलंलमेता।

यज्ञ एक विचार

यज्ञ तीन प्रकार के होते हैं सात्विक, राजस और तामस मुनियों तथा सात्विक साधकों के द्वारा सात्विक यज्ञ राजाओं के लिए राजस तथा दैत्यों के लिए तामस यज्ञ होता है। द्रव्य शुद्धि, क्रिया शुद्धि और मंत्र शुद्धि यज्ञ सम्पन्न करना चाहिए। लौकिक यश तथा परालौकिक सुख न्याय से अर्जित धन के पुण्य से ही प्राप्त होता है। राजा दशरथ को पुत्रेष्ठि से चार पुत्र मिले। अर्थात् यज्ञ में शुद्धि रही तथा प्रयोजन पूर्ण हुआ किन्तु पाण्डवों द्वारा राजसूय यज्ञ किया गया। यज्ञ के पश्चात् ही धुत क्रीड़ा में पराजय पांचाली का चीरहरण पाण्डवों को वनवास आदि अप्रिय घटनाओं का सामना करना पड़ा। आखिर क्यों? यहाँ पर प्रतीत होता है कि उन्होंने अभिमानपूर्वक यज्ञ किया वहीं श्रीराम के अश्वमेद्य यज्ञ के मूल में भी सीताजी का पृथ्वी में प्रवेश, वीरों का हताहत होना यज्ञ के अभाव का सांकेतिक है अस्तु यज्ञ बिना विकार तथा पवित्र धन शुद्ध मंत्रों द्वारा ही सार्थक होगा अन्यथा प्रतिकूल परिणामों का कारण होगा।

सात्विक यज्ञ दुर्लभ है। खीर बनाकर मंत्र सहित हवन करें। पशुबलि वर्जित है। द्रव्य श्रद्धा क्रिया ब्राह्मण देश और काल सभी साधनों से यज्ञ पूर्ण होते हैं।

यज्ञ विधान-पवित्र मन से इन्द्रियों पर नियंत्रण होने पर यज्ञ मण्डप की स्थापना करें। पांच अग्नियों की वेदी पर सविधि स्थापना करें। यज्ञ के प्रथम देव साक्षात् ब्रह्म है। चित्त को निर्विकार कर सुषुम्णा मार्ग से नित्य ब्रह्म में होम दें। तदन्तर माँ भगवती का ध्यान करें।

♦♦♦

आपका आने वाला कल

जानिये अपना भविष्य

प्रामाणिक विधि से प्राण-प्रतिष्ठित इन यंत्रों एवं मुफ्त
'जानकारियों का खजाना' पुस्तिका के लिये सम्पर्क करें।

विश्व तंत्र-ज्योतिष

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ,
पॉलिटेक्निक कॉलेज, मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)
फोनः 0291–2621625, 2618625, 2615625, 2440111, 2440999
Email: tantravtj@yahoo.co.in Visit us: www.fameandfortune.org